

14-09-2023

खोई (बैगास) से इथेनॉल उत्पादन हेतु कम लागत की तकनीक होगी विकसित

कानपुर (नारा छाया समाचार) | राष्ट्रीय शक्ति संस्थान, कानपुर और भारतीय गत्रा अनुसंधान संस्थान, लखनऊ संयुक्त रूप से दूसरी पीढ़ी, 2जी इथेनॉल के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करने पर काम करने वाली देश के पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम बनाया जा सके। देश को 2025 तक पेट्रोल में 20 प्रतिशत की दर से मिश्रण करने के लिए लगभग 10,000 मिलियन लीटर इथेनॉल की आवश्यकता होगी।

इस उद्देश्य के लिए, भारतीय गत्रा अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. रसपा विश्वनाथ ने राष्ट्रीय शक्ति संस्थान, कानपुर का दौरा किया और नरेंद्र मोहन, निदेशक और राष्ट्रीय शक्ति संस्थान, कानपुर के अन्य वैज्ञानिकों के साथ इस मामले पर चर्चा की। दोनों संस्थानों का लक्ष्य गत्रा की खोई (बैगास) से इथेनॉल के उत्पादन के लिए कम लागत वाली तकनीक विकसित करना है, खोई का उपयोग बढ़ावदार में मुख्य रूप से बायोलैंग जलाने के लिए इधन के रूप में किया जाता है।

चीनी कारखाने अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के बाद भी प्रति वर्ष लगभग पचास लाख मीट्रिक टन खोई बचाते हैं जिसका उपयोग इथेनॉल के उत्पादन के लिए किया जा सकता है। इस उद्देश्य के लिए, खोई में मौजूद सेलूलॉज को इथेनॉल में परिवर्तित किया जाना है और इथेनॉल इस प्रकार बने इथेनॉल को 2जी के अलावा, इसे सेल्युलॉजिक इथेनॉल के रूप में भी जाना जाता है, निदेशक नरेंद्र मोहन ने कहा है। अन्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध सस्ते कच्चे माल



और फसलों के अवश्यक पर अपने अधिकारी विस्तार करेगे। उन्होंने कहा कि ऐसा करने से गेहूं के भूसे, चावल के भूसे और कपास के डल आदि के उपयोग से पराली जलाने से होने वाले प्रदूषण से संबंधित मुद्दे को हल करने में भी मदद मिलेगी। विश्व स्तर पर 100 से अधिक पाइलट प्लाट और अनेक पाइलट और वाणिज्यिक संवेद स्थापित होने के बावजूद भी 2जी इथेनॉल उत्पादन

प्रौद्योगिकियों को आर्थिक और तकनीकी रूप से व्यवहार्य होने के लिए बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, भारतीय गत्रा अनुसंधान संस्थान के निदेशक ने कहा। हमारा लक्ष्य मिलकर कम पूँजी और परिचालन लागत की आवश्यकता वाली प्रौद्योगिकी पर काम करना है ताकि उत्पादन की कम लागत सुनिश्चित की जा सके और इकाइयों को व्यवहार्य बनाया जा सके।

2जी इथेनॉल के उत्पादन को विकसित करेंगे प्रौद्योगिकी

■ सन 2025 तक पेट्रोल में 20 प्रतिशत की दर से मिश्रण को 10 हजार मिलियन लीटर इथेनॉल की आवश्यकता

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 13 सितम्बर।

राष्ट्रीय शक्ति संस्थान और भारतीय गत्रा अनुसंधान संस्थान, लखनऊ संयुक्त रूप से दूसरी पीढ़ी, 2जी इथेनॉल के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करने पर काम करेंगे। ताकि देश को पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम बनाया जा सके। देश को 2025 तक पेट्रोल में 20 प्रतिशत की दर से मिश्रण करने के लिए लगभग 10 हजार मिलियन लीटर इथेनॉल की आवश्यकता होगी। इस उद्देश्य के लिए भारतीय गत्रा अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. रसपा विश्वनाथ, प्रो. नरेंद्र मोहन ने निरीक्षण के दौरान निदेशक डा. रसपा विश्वनाथ, प्रो. नरेंद्र मोहन।



वर्तमान में मुख्य रूप के अवैष्य बायोलैंग में जलाने के पर अपने अध्ययन का विस्तार करेगे। लिए इंधन के रूप में उन्होंने कहाकि ऐसा करने से गेहूं के भूसे, चावल के भूसे और कपास के डल आदि के उपयोग से पराली जलाने से होने वाले प्रदूषण से संबंधित मुद्दे को हल करने में मदद मिलेगा। विश्व स्तर पर 100 से अधिक पाइलट प्लाट और अनेक पाइलट और वाणिज्यिक संवेद स्थापित होने के बावजूद भी 2जी इथेनॉल उत्पादन प्रौद्योगिकियों को आर्थिक और तकनीकी रूप से व्यवहार्य होने के लिए बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। भारतीय गत्रा अनुसंधान संस्थान के निदेशक ने कहा कि हमारा लक्ष्य मिलकर कम पूँजी और परिचालन लागत की आवश्यकता वाली प्रौद्योगिकी पर काम करना है ताकि उत्पादन की कम लागत सुनिश्चित की जा सके और इकाइयों को व्यवहार्य बनाया जा सके।

एनएसआई के अन्य वैज्ञानिकों के खोई में मौजूद सेलूलॉज को इथेनॉल संथानों का लक्ष्य गत्रा की खोई इथेनॉल इस प्रकार बने इथेनॉल को 2जी के अलावा, इसे सेल्युलॉजिक इथेनॉल के रूप में जाना जाता है। हम अन्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध सस्ते कच्चे माल

संथान के लिए इसमें मैं चर्चा की। दोनों में परिवर्तित किया जाना है और इसलिए इस प्रकार बने इथेनॉल को 2जी के अलावा, इसे सेल्युलॉजिक इथेनॉल के रूप में जाना जाता है। हम अन्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध सस्ते

कच्चे माल और फसलों के अवैष्य बायोलैंग में जलाने के पर अपने अध्ययन का विस्तार करेगे। लिए इंधन के रूप में उन्होंने कहाकि ऐसा करने से गेहूं के भूसे, चावल के भूसे और कपास के डल आदि के उपयोग से पराली जलाने से होने वाले प्रदूषण से संबंधित मुद्दे को हल करने में मदद मिलेगा। विश्व स्तर पर 100 से अधिक पाइलट प्लाट और अनेक पाइलट और वाणिज्यिक संवेद स्थापित होने के बावजूद भी 2जी इथेनॉल उत्पादन प्रौद्योगिकियों को आर्थिक और तकनीकी रूप से व्यवहार्य होने के लिए बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। भारतीय गत्रा अनुसंधान संस्थान के निदेशक ने कहा कि हमारा लक्ष्य मिलकर कम पूँजी और परिचालन लागत की आवश्यकता वाली प्रौद्योगिकी पर काम करना है ताकि उत्पादन की कम लागत सुनिश्चित की जा सके और इकाइयों को व्यवहार्य बनाया जा सके।

राष्ट्रीय शक्ति संस्थान, कानपुर और भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ संयुक्त रूप से दूसरी पीढ़ी जी इथेनॉल के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करे

दैनिक देश मोर्चा

संवाददाता मनी वर्मा

आप को बता दे कि देश को पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम बनाया जा सके। देश को 2025 तक पेट्रोल में 20% की दर से मिश्रण करने के लिए लगभग 10,000 मिलियन लीटर इथेनॉल की आवश्यकता होगी। इस उद्देश्य के लिए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. रसप्पा विश्वनाथ ने गांडीजी शक्ति संस्थान, कानपुर की दौरा किया और श्री नरेंद्र मोहन, निदेशक और गांडीजी शक्ति संस्थान, कानपुर के अन्न वैज्ञानिकों के साथ इस मामले पर चर्चा की। दोनों संस्थानों का लक्ष्य गन्ने की खोई (बैगास) से इथेनॉल के उत्पादन के लिए कम लागत वाली तकनीक विकसित करना है, खोई का उपयोग वर्तमान में मुख्य रूप से बौद्धिक जलाने के लिए इंधन के रूप में किया जाता है चीनी कारखाने अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के बाद भी प्रति वर्ष लगभग पचास लाख मीट्रिक टन



खोई बचाते हैं जिसका उपयोग इथेनॉल के उत्पादन के लिए किया जा सकता है। इस उद्देश्य के लिए खोई में मौजूद सेल्यूलॉज की इथेनॉल में परिवर्तित किया जाना है और इसलिए, इस प्रकार बने इथेनॉल को 2जी के अलावा, इसे सेल्यूलॉसिक इथेनॉल के रूप में भी जाना जाता है, जिसका निदेशक श्री नरेंद्र मोहन ने कहा है। अन्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हम अन्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध सर्ते कच्चे माल और फसलों के अवधेष्य पर अपने अध्ययन का विस्तार करेंगे। उन्होंने कहा कि ऐसा करने से गेहूं के भूसे चावल के भूसे और कपास के डंठल आदि के उपयोग से पराली जलाने से होने वाले प्रदूषण से

संबंधित मुद्दों को हल करने में भी मदद मिलेगी। विश्व द्वारा पर 100 से अधिक पायलट प्लॉट और अनेक पाइलट और वाणिज्यिक संयंत्र स्थापित होने के बावजूद भी जी इथेनॉल उत्पादन प्रौद्योगिकियों को आर्थिक और तकनीकी रूप से व्यवहार्य होने के लिए बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक ने कहा है कि उत्पादन की घमार लक्ष्य मिलकर कम पूँजी और परिचालन लागत की आवश्यकता वाली प्रौद्योगिकी पर काम करना है ताकि उत्पादन की कम लागत सुनिश्चित की जा सके और इकाइयों को व्यवहार्य बनाया जाए।

गन्ने की खोई से बनेगा सेकेंड जनरेशन टू जी इथेनॉल

एनएसआई और गन्ना अनुसंधान संस्थान मिलकर विकसित करेंगे प्रौद्योगिकी

कानपुर। गन्ने की खोई से सेकेंड जनरेशन टू जी इथेनॉल का उत्पादन किया जाएगा। इससे देश को पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण की आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिलेगी। वर्ष 2025 तक पेट्रोल में 20 फीसदी की दर से मिलाने के लिए 10 हजार मिलियन लीटर इथेनॉल की आवश्यकता होगी। चीनी कारखानों में इस्तेमाल के बाद हर साल 50 लाख मीट्रिक टन खोई बच जाती है। इसका इस्तेमाल इथेनॉल बनाने में किया जाएगा। टू जी इथेनॉल की प्रौद्योगिकी को विकसित



डॉ. रसप्पा विश्वनाथ और साथ में प्रोफेसर नरेंद्र मोहन। स्वाद

करने के लिए नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) और भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान मिलकर काम करेंगे।

गन्ना अनुसंधान के निदेशक डॉ. रसप्पा

विश्वनाथ और एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बुधवार को एनएसआई में वैज्ञानिकों के साथ सेकेंड जनरेशन टू जी इथेनॉल पर चर्चा की। वर्तमान में खोई का इस्तेमाल मुख्य रूप से बौद्धिक जलाने के लिए इंधन के रूप में किया जाता है। प्रोफेसर नरेंद्र ने बताया कि खोई में सेल्यूलॉज होता है। इसे इथेनॉल के रूप में परिवर्तित किया जाना है। इसे सेल्यूलॉसिक इथेनॉल के रूप में भी जाना जाता है। बताया कि दोनों संस्थान गेहूं और चावल की भूसी, कपास के डंठल के उपयोग पर भी अध्ययन करेंगे। इससे पराली से होने वाले प्रदूषण की रोकथाम में मदद मिलेगी। (व्यूरो)

गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक ने राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का किया दौरा तकनीकी विषय पर की चर्चा

संबाददाता

अरुण जौशी

कानपुर राष्ट्रीय शर्करा

संस्थान, और भारतीय गन्ना

अनुसंधान संस्थान, लखनऊ

संयुक्त रूप से दूसरी पीढ़ी, जो

इथेनॉल के उत्पादन के लिए

प्रौद्योगिकी विकसित करने पर

काम करेंगे ताकि देश को पेट्रोल

में इथेनॉल मिश्रण की

आवश्यकताओं को पूरा करने

में सक्षम बनाया जा सके। देश

को 2025 तक पेट्रोल में 20 ल

की दर से मिश्रण करने के लिए

लगभग 10,000 मिलियन

लीटर इथेनॉल की आवश्यकता

होगी। इस उद्देश्य के लिए

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान

के निदेशक डॉ. रमेश

विश्वनाथ ने राष्ट्रीय शर्करा

संस्थान, का दैर्घ्य किया एवं

नरेंद्र मोहन, निदेशक राष्ट्रीय

शर्करा संस्थान, के अन्य

वैज्ञानिकों के साथ इस विषय

पर चर्चा की। दोनों संस्थानों

का लक्ष्य गन्ने की खोई

(बैंगास) से इथेनॉल के

उत्पादन के लिए कम लागत

वाली तकनीक विकसित करना

है, खोई का उपयोग वर्तमान में

मुख्य रूप से बॉयलर में जलाने

के लिए इथन के रूप में किया

जाता है। चौंका कारखाने अपनी

आवश्यकताओं को पूरा करने

के बाद भी प्रति वर्ष लागत

पचास लाख मीट्रिक टन खोई

बचते हैं जिसका उपयोग

इथेनॉल के उत्पादन के लिए

किया जा सकता है। इस उद्देश्य

के लिए खोई में मौजूद

सेल्युलोज को इथेनॉल में

परिवर्तित किया जाना है और

इसलिए इस प्रकार बने इथेनॉल

को 2 जी के अलावा, इसे

सेल्युलोसिक इथेनॉल के रूप

में भी जाना जाता है, निदेशक

नरेंद्र मोहन ने कहा। हम अन्य

प्रत्युष मात्रा में उपलब्ध सारे

कच्चे माल और फसलों के

अवशेष पर अपने अध्ययन का

विश्वास करेंगे। आगे कहा कि

ऐसा करने से गेहूं के भूसे,



चावल के भूसे और कपास के के लिए बहुत सारी चुनौतियों डंठल आदि के उपयोग से का सामना करना पड़ा है, धारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान प्रटूषण से संबंधित मुद्दों को हल किया है। इसके लिए चालन की मिलकर कम पूंजी और विश्व स्तर पर 100 से अधिक परिचय दिया जाता है। अन्य विश्वासित होने के बावजूद भी 2 जी इथेनॉल उत्पादन की अवश्यकता बाली प्रौद्योगिकी को अधिक और अधिक और इकाइयों को व्यवहार्य बनाया जा सके।

2जी इथेनॉल विकसित करेगा एनएसआई

कानपुर, प्रमुख संबाददाता। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) के वैज्ञानिक अब 2जी इथेनॉल (सेल्युलोसिक इथेनॉल) विकसित करेंगे। इस शोध में लखनऊ स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक भी मदद करेंगे।

2जी इथेनॉल को गन्ने की खोई में मौजूद सेल्युलोज से विकसित किया जाएगा। यह जानकारी एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने दी। इसी योजना के तहत लखनऊ के निदेशक डॉ. रमेश विश्वनाथ ने एनएसआई का भ्रमण किया। संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि 2025 तक पेट्रोल में 20 फीसदी की दर से



भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक ने एनएसआई का निरीक्षण किया।

इथेनॉल मिश्रण का लक्ष्य पूरा करने को 10 हजार मिलियन लीटर उत्पादन की जरूरत होगी। वर्तमान में हर साल 50 लाख मीट्रिक टन खोई बचती है, जिससे इथेनॉल विकसित कर लक्ष्य को पूरा करना आसान होगा। उन्होंने

कहा कि दोनों संस्थान मिलकर गन्ने की खोई से इथेनॉल के उत्पादन के लिए कम लागत वाली तकनीक विकसित करेंगे। अभी तक खोई का इधन के लिए बॉयलर में जलाने में प्रयोग हो रहा है।

डॉ. रसप्पा विश्वनाथ ने राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का दौरा किया

संवाददाता

कानपुर: राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर और भारतीय गजा अनुसंधान संस्थान लाइसेंस संस्कृत हस्प से दूसरी पीढ़ी, 2 वीं इंजीनीयों के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी विकास करने पर काम करेंगे ताकि देश को ऐंटोल में इंजीनीय मिशन की आवश्यकताओं को पूरा करने में सहमत बनाया जा सके। देश को 2025 तक ऐंटोल में 20 प्रतिशत को दा से मिशन करने के लिए लगभग 10,000 प्रिलियन लीटर इंजीनीय की आवश्यकता होंगी। इस दैरेस के लिए भारतीय गजा अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. रसप्पा विश्वनाथ ने राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर का दौरा किया और नरेंद्र मोहन, निदेशक और राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के अन्य वैज्ञानिकों के साथ इस मामले पर

चर्चा की। दोनों संस्थानों का लक्ष्य गजा को खोड़ (बेगम) से इंटीलोज के उत्पादन के लिए कम लगात वाली तकनीक विकास करना है, खोड़ का उत्पादन वर्धमान में भूमिका हस्प से बर्धित में जलाने के लिए ईंधन के रूप में किया जाता है। खोड़ का उत्पादन अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के बाद भी प्रति वर्ष लगभग एकाहस लाख मीट्रिक टन खोड़ बनाते हैं जिसका उपयोग इंजीनीयों के उत्पादन के लिए किया जा सकता है। इस दैरेय के लिए, खोड़ में मोटूल सेलूलोज को इंजीनीय में परिवर्तित किया जाना है और इसलिए इस प्रकार बड़े इंजीनीय को 2 वीं के अलावा इसे मोटूलसिक इंजीनीय के रूप में भी जाना जाता है, निदेशक नरेंद्र मोहन ने कहा। हम अन्य प्रचुर मात्रा में उत्पादन करने में और फसलों के अधिक पर अपने

अध्ययन का विस्तार करेंगे। उद्देश्य का कि एसो काले से गेहू के भूमि वालाने के भूमि और कामान के डिल्ल आदि के उत्पादन से प्राप्ती जलाने से सेवे वाले प्रदूषण से दूरीता मूद्दों को हल करने में भी मदद मिलेगी।

विद्युत घर पर 100 से अधिक पावलट प्लाट और अनेक पावलट और वार्पिनिक संरचना प्राप्ति होने के बावजूद भी 2 वीं इंजीनीय उत्पादन प्रौद्योगिकीयों को आर्थिक और लक्ष्योंका रूप से व्यवहार्य होने के लिए बहुत सारे कुरुक्षितीयों का सामना करना पड़ता है, भारतीय गजा अनुसंधान संस्थान के निदेशक ने कहा। हमारा लक्ष्य यिलकर कम पूँजी और परिवहन लगात की आवश्यकता वाली प्रौद्योगिकी पर काम करना है ताकि उत्पादन की कम लगात मूद्दीता को जा सके और इसलिये को व्यवहार्य बनाया जा सके।



NSI, IISR to jointly work on developing technology for production of 2G ethanol

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

National Sugar Institute (NSI), Kanpur and Indian Institute of Sugarcane Research (IISR), Lucknow, will jointly work on developing technology for production of second generation 2G ethanol so as to enable the country to meet its requirements for ethanol blending in petrol. The country will require about 10,000 million litre of ethanol for blending it @20 per cent in petrol by 2025.

For the purpose Director, IISR, Dr Rasappa Vishwanath, visited the NSI on Wednesday and discussed the matter with Director Prof Narendra Mohan and other scientists. The two institutes aim to develop a low cost technology for production of ethanol from bagasse which otherwise was used mainly as fuel for burning in boilers.

Sugar factories even after meeting their own requirements save about one million metric tonne of bagasse per annum which can be utilised

for production of ethanol. For the purpose, the cellulose present in the bagasse was to be converted into ethanol and therefore apart from 2G, it was also known as cellulosic ethanol, said Prof Narendra Mohan. He said the institute will extend its studies on other abundantly available cheap raw materials and waste, wheat straw, rice straw and cotton stalk etc. too as utilisation of these material in such a manner will also help in solving issues related to pollution due

to stubble burning.

The 2G ethanol production technologies have faced lot of challenges to be economically and technologically viable despite more than 100 pilot plant and tens of demonstration and commercial plant commissioned globally.

Together the National Sugar Institute aims to work out technology requiring lower capital and operational cost so as to ensure lower cost of production and making units viable.

2जी इथेनॉल प्रौद्योगिकी विकसित करेंगे गन्ना व शर्करा संस्थान कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान और भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान मिल कर 2जी इथेनॉल के उत्पादन की तकनीक विकसित करेंगे। इसके चलते बुधवार को गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. रसप्पा विश्वनाथ ने एनएसआई का दौरा कर इस मर्क्यूर्ड में यहाँ के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन से चर्चा की। देश में वर्ष 2025 तक पेट्रोल में 20 फीसद की दर से इथेनॉल मिश्रण करने की योजना है। एक अनुमान के मुताबिक देश को इसके लिये वर्ष 2025 तक 10 हजार मिलियन लीटर इथेनॉल की आवश्यकता होगी। ऐसे में दोनों संस्थानों का प्रयास है कि गन्ने की खोई से बनने वाले इथेनॉल की ही गुणवत्ता और बेहतर करने के साथ-साथ इसकी उत्पादन लागत कम करके लक्ष्य को हासिल किया जाए। बुधवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. रसप्पा विश्वनाथ ने राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन के साथ शर्करा संस्थान का दौरा करने के साथ ही गन्ने की खोई से इथेनॉल उत्पादन की कम लागत वाली तकनीक विकसित करने को लेकर चर्चा की। प्रो. नरेन्द्र मोहन ने कहा कि मौजूदा समय में खोई का मुख्य उपयोग बॉयलर के ईंधन के रूप में किया जाता है। चीनी कारखाने अपनी आवश्यकता पूरी करने के बाद भी प्रति वर्ष लगभग 50 लाख मीट्रिक टन खोई बचाते हैं, जिसका उपयोग इथेनॉल उत्पादन के लिये किया जा सकता है। इसके लिये खोई में मौजूद सेलुलोज को इथेनॉल में परिवर्तित किया जाना है, इसके चलते ही इस प्रकार से बनने वाले इथेनॉल को 2जी इथेनॉल के अलावा सेल्युलोसिक इथेनॉल भी कहा जाता है। उन्होंने कहा कि हम अन्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध सस्ते कच्चे माल और फसलों के अवशेष पर अपना अध्ययन आगे बढ़ाएंगे। ऐसा करने से गेहूं के भूसे, कपास के डंठल और चावल की भूसी आदि उपयोग में आने लगते हैं, तो वहाँ पराली जलाने से होने वाली समस्या से भी निजात मिलेगी। वहाँ, गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. रसप्पा विश्वनाथ ने कहा कि विश्वस्तर पर 100 से अधिक पायलट प्लांट और अनेक पाइलट और वाणिज्यिक संयंत्र स्थापित होने के बावजूद 2जी इथेनॉल उत्पादन प्रौद्योगिकियों को आर्थिक व तकनीकी रूप से व्यावहारिक बनाने के लिये बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य कम पूँजी और परिचालन लागत वाली प्रौद्योगिकी पर काम करना है।